श्वेत मुनि

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

श्वेत-वराह कल्प में ब्रह्मा के मानस-पुत्र के रूप में 'श्वेत' नामक एक महामुनि ने जन्म ग्रहण किया। श्वेत मुनि और ब्रह्म-देहज उनके पूर्वज मुनिगण सहस्त्र वर्षों तक पाशुपत-योग अवलम्बन पूर्वक निष्कलुष काया द्वारा धर्मोपदेश में युक्त रहकर पुनः ब्रह्मदेह में ही विलीन हो गये। यही श्वेत मुनि प्रजापति ऋषिराज के रूप में धराधाम पर अवतीर्ण हुए। नरपति 'श्वेत' शिवयोग साधन में कई हजार वर्षों तक तपस्यारत रहकर पूर्ण सिद्ध और आप्तकाम हुए थे। त्रेतायुग में विदर्भराज सुदेव के प्रथम पत्नि के पुत्ररूप में 'श्वेत' ने धरणी पर जन्मग्रहण किया। सुदेव त्रिभुवन विख्यात सम्राट थे। पिता के देहावसान के पश्चात् 'श्वेत' पितृ सिंहासनारूढ़ हुए। पूर्वजन्मार्जित शुद्ध ब्राह्मणत्व के संस्कारवश श्वेत प्रजापति को अपनी आयु की अवधि ज्ञात थी। कालक्रमानुसार जब उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि उनकी आयु अब शेष होने को है तब उन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता सुरथ का राज्याभिषेक कर तपस्यार्थ एक दण्डक सरोवर तट स्थित वन में गमन किया एवं वहाँ तीन हजार वर्षों तक कठोर तपस्या कर ब्रह्मलोक को प्रस्थान किया।

ब्रह्मलोक में आगमन के पश्चात् भी वे क्षुधा-तृष्णा से पीड़ित होने लगे इसलिए उन्होंने अतिशय आश्चर्यचकित व्याकुल चित्त से ब्रह्माजी के पास जाकर उनको अपनी समुदय अवस्था से अवगत कराया और उनसे इस बुभूक्षा का कारण पूछा। ब्रह्माजी ने कहा कि श्वेत राज तपस्या करने के समय तुमने केवल निज देह की ही पुष्टि की थी, परन्तु कभी भी कुछ दान नहीं किया। जैसे वपन न करने पर किसी भी फल की प्राप्ति संभव नहीं है ठीक उसी प्रकार कर्मफल की भी गति है। इसी कारण ब्रह्मलोक में उपस्थित रहकर भी वे क्षुधा-तृष्णा से पीड़ित हो रहे हैं। ब्रह्मा ने यह मंतव्य दिया कि श्वेत को निज शव भक्षण कर क्षुधा-निवृत्ति करनी होगी। सुदीर्घ कालोपरांत महर्षि अगस्त्य की कृपा से उसे मुक्तिलाभ होगी। तदावधि श्वेत मुनिराज ब्रह्मलोक से प्रतिदिन हंसयुक्त दिव्य विमान द्वारा मृत्युलोक में दण्डक जलाशय तट पर आकर निज शव माँस भक्षण कर अपनी दैनिक क्षुधा तृप्त करते थे। ब्रह्मा के वरदान से शव का भक्षित अंश प्रतिदिन पुनः पूर्णता लाभ कर लेता। एकदिन महर्षि अगस्त्य ने अरण्य में भ्रमण के क्रम में श्वेत राज को शव माँस भक्षण करते हुए देखा। अगस्त्य मुनि द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर श्वेत राज ने उनको इस सम्पूर्ण घटनाक्रम से अवगत कराया। तदन्तर महर्षि अगस्त्य ने श्वेत मुनि के पास से मात्र एक आभरण अनुत्तम् ग्रहण किया। तदुपरांत श्वेत-राज ने मुक्ति लाभ कर ब्रह्मलोक को प्रत्यागमन किया।

यही श्वेत मुनि वराहकल्प के द्वापर के प्रथम चरण में महादेव के अंशावतार 'श्वेत' नामक शिखायुक्त महामुनि के रूप में इस धराधाम पर अवतीर्ण हुए। उस समय श्वेत, श्वेतशिख, श्वेताश्व और श्वेत लोहित नामक उनके चार शिवभक्त ब्रह्मनिष्ठ शिष्य थे।

वराह कल्प के त्रयोविंशद्वापर में महादेव के अंश से श्वेत मुनि पुनः आविर्भूत हुए। उस समय शिवावतार ब्रह्मर्षि श्वेत के उशिक, वृहदाश्व, देवल और कवि नामक चार पुत्र हुए। श्वेत मुनि ने हिमालय पर्वत पर काल को जराग्रस्त किया इसीकारण हिमालय पर्वत 'कालंजर' नाम से विख्यात् है। श्वेत मुनि परमशिवभक्त थे। एकबार यम द्वारा उन्हें यमपुरी ले जाकर मारने की चेष्टा करने पर शिव ने यम को भस्मीभूत कर दिया एवं श्वेत मुनि को गाणपत्य पद किया।

आत्मज्ञान के दृष्टिकोण से यही श्वेत मुनि कलियुगान्त में दक्षिण के नागराज मुनि। इन्हें अनेक लोग भ्रमवश श्रीश्रीश्यामाचरण लाहिड़ी बाबा के सद्गुरु महामुनि बाबाजी महाराज कहते हैं। इसी भूल की परिशुद्धि हेतु ही 'श्वेत मुनि' चरित कथा, विभिन्न पुराणों की सहायता से इस क्षेत्र में व्यक्त की गई है।

(सहायक ग्रंथ : रामायण, वायुपुराण, लिंगपुराण, स्कन्दपुराण)